अन्त में दुःखरूप हो जाता है; परन्तु तामस मनुष्य के लिए तो आदि-अन्त में सदा-सर्वदा दुःख ही दुःख है।

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः।।४०।।

न=नहीं; **तत्**=वह; **अस्ति**=है; **पृथिव्याम्**=पृथ्वी में; **वा**=अथवा; **दिवि**=स्वर्गलोकों में; **देवेषु**=देवताओं में; **वा**=भी; **पुनः**=फिर; **सत्त्वम्**=प्राणी, **प्रकृतिजैः**=प्रकृति से उत्पन्न; **मुक्तम्**=रहित; **यत्**=जो; **एभिः**=इन; **स्यात्**=हो; **त्रिभिः**=तीनों; **गुणैः**=गुणों से।

अनुवाद

पृथ्वी में अथवा स्वर्गीय देवताओं तक में ऐसा कोई प्राणी नहीं है, जो प्रकृति से उत्पन्न इन तीनों गुणों से रहित हो।।४०।।

तात्पर्य

श्रीभगवान् यहाँ संक्षेप से कहते हैं कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में माया के त्रिगुणों का प्रभाव व्याप्त है।

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः।।४१।।

ब्राह्मण=ब्राह्मण; **क्षत्रिय**=क्षत्रिय; **विशाम्**=वैश्यों के; **शूद्राणाम् च**=शूद्रों के भी; **परंतप**=हे शत्रुविजयी अर्जुन; **कर्माणि**=कर्म; **प्रविभक्तानि**=पृथक्-पृथक् कहे गए हैं; **स्वभावप्रभवैः**=स्वभाव से उत्पन्न; **गुणैः**=गुणों के द्वारा।

अनुवाद

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के कर्म स्वाभाविक गुणों के अनुसार विभक्त किये गये हैं।।४१।।

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम्।।४२।।

शमः=मन का शान्तभाव; **दमः**=आत्मसंयम; **तपः**=तपस्या; **शौचम्**=पवित्रता; **क्षान्तिः**=सहिष्णुता; **आर्जवम्**=सरलता और सत्यनिष्ठा; **एव**=निःसन्देह; **च**=तथा; **ज्ञानम्**=ज्ञान; **विज्ञानम्**=विज्ञान; **आस्तिक्यम्**=भक्ति-विश्वास; **ब्रह्मकर्म**=ब्राह्मणं के कर्म हैं; **स्वभावजम्**=स्वाभाविक।

अनुवाद

शान्ति, आत्मसंयम, तप, पवित्रता, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा, ज्ञान, विज्ञान और भक्ति-विश्वास—ये गुण ब्राह्मण के स्वाभाविक कर्म हैं।।४२।।

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम्।।४३।।